

٧٥

كف
روى نصير بن جديدا
رحله الشتاء بالامالة

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم
ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

كف
روى نصير بن جديدا
رحله الشتاء بالامالة

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

ابو جعفر بن سايه ساكنه من غير منزله
الافهم

۱۰۰

منه

25

١٠
 ١١
 ١٢
 ١٣
 ١٤
 ١٥
 ١٦
 ١٧
 ١٨
 ١٩
 ٢٠
 ٢١
 ٢٢
 ٢٣
 ٢٤
 ٢٥
 ٢٦
 ٢٧
 ٢٨
 ٢٩
 ٣٠
 ٣١
 ٣٢
 ٣٣
 ٣٤
 ٣٥
 ٣٦
 ٣٧
 ٣٨
 ٣٩
 ٤٠
 ٤١
 ٤٢
 ٤٣
 ٤٤
 ٤٥
 ٤٦
 ٤٧
 ٤٨
 ٤٩
 ٥٠
 ٥١
 ٥٢
 ٥٣
 ٥٤
 ٥٥
 ٥٦
 ٥٧
 ٥٨
 ٥٩
 ٦٠
 ٦١
 ٦٢
 ٦٣
 ٦٤
 ٦٥
 ٦٦
 ٦٧
 ٦٨
 ٦٩
 ٧٠
 ٧١
 ٧٢
 ٧٣
 ٧٤
 ٧٥
 ٧٦
 ٧٧
 ٧٨
 ٧٩
 ٨٠
 ٨١
 ٨٢
 ٨٣
 ٨٤
 ٨٥
 ٨٦
 ٨٧
 ٨٨
 ٨٩
 ٩٠
 ٩١
 ٩٢
 ٩٣
 ٩٤
 ٩٥
 ٩٦
 ٩٧
 ٩٨
 ٩٩
 ١٠٠

اجل الصلوة اهـ خفصاً عند ندم الدين والاد
واليه سورة قريش اتفاق
ترا ابن عامر ليلان قريش بنزى يا بعد الهرة
قرا ابو جعفر بيا ساكنة من غير شين ثناء
ابو جعفر الا فهم بهمة لا يا بعد ما مشول
علا فمهم مدس من الصك افروا

ودش والوزي ليلان
عنه نقل الذي
هشام وشم

ترا قالون تعفص وليج بن بفتح اليا قرا يعقوب
ديني بيا في الحيا لين سوي مالا لمسك
قرا ابن كثير بيا طبيب بسكون الهاء قراء
عامم تحالة الخطيب بالنصب سوي لا الانلاص
قرا خنزة واسمعيلى ونلف ويعقوب كقولاً اسد
باسكان الفاء ورا بالنصب ووقف خنزة بالواو مع
اسكان الفاء ورا خفص بالواو ومن غير هوس
البا قون بالنصب مع نهم النافط لوقفة الفنى عن
رويس عن يعقوب اذ غم لذهب بسعفس والكتاب
باليدهم والصلكتاب بالحق والكتاب بالهجرة
والسحاب بالنصب فلا انساب بينهم واذا غم طبع

علي قلوبهم وان تقع على الارض فنتظ وادغم من
حصم مهاد وادغم الهاء في الهاء صكتا في
الخم واند هو واذا غم من هنا المجلس من فشا
واحكام في البقرة بيا ووزن عوى ويقف على السان
الذي يلنا هـ همة بسكتة يسين دون همة
ووقف على الهاء في صغير الوقت في المون
هتله وكذا لك في ثم تمت ولما ذهبت له
وبنه وهتله وكذا لك ما هو لاند سسة
كقولها يا ويلنا ويا خسرتا ويا استفا وكسر
الطاء من يلبوهم الا مل في الحيز ولبوهم الله
في النور وقهم السيات وقهم غاب الحيز
وقرا قرا جعوا بالوصل وفتح اليم وانما نون
بالون يذ ابراهيم وعبوات ادخلوا بنهم النور
وكسر الفاء في الحيز محال الغيب بنهم الميم
الا تملوا ورا الوصل في المون اسخر
الغلاف والهاء لله ريت العاتمان وصر الله
على سكتا عكس سكتا والد الفتى في اللامتين

(الورقة الاخيرة من نسخة : ظ)

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

Dr. the University of Cambridge

فاني خذت من عباد الله من العبيد وامروني بذلك فاجبوني ان يكون قراة عبادي
فامروني بذلك واحضرت معاهدين هما انه قرا علي هذا الله من عبادي فمع بذلك وجوب
ان عبادي له قرا علي اني بن كعب فامروني بذلك اخذت الي انة قرا علي رسول الله
الله صلى الله عليه وسلم فامروني بذلك وكان آخرون يشيرون لا اله الا الله
الله والله اكبر فيمهلون قبل التكميل واستدلوا على صحة ذلك باحاديث
فارس بن حذاف الحنظلي قال حدثنا جدي الباقي بن كعب عن ابي حنيفة عن ابي جابر
عن ابي عثمان بن ابي حنيفة عن ابي حنيفة عن ابي حنيفة بن ابي حنيفة قال سالت
الشيخ عن ابي حنيفة كيف هو ففانكس الى الله لا اله الا الله والله اكبر قال
ابو حنيفة وابن كعب اب هذا من الامتقان والقطب وصدق الحديث
كان لا يجهله احد من علماء هذه الضعة وهذا قرأت علي ابي
الفتح وقرأت علي عيين بن ابي حنيفة عن ابي حنيفة عن ابي حنيفة عن ابي حنيفة
وصال التكميل بآخر السورة فان كان آخرها ساكنا كسرة لساكنين كوز
في ذات الله اكبر وقرا عيب الله اكبر وان كان منوناً لساكنين كوز
كذلك ابي حنيفة وسأرت ان كان الحرف الحنون مفتوحاً او مضموماً او مكسوراً
مخفياً كما في الله اكبر وحنين الله اكبر ومن عبيد الله اكبر وشبهه
وان كان آخر السورة مفتوحاً ففتح وان كان مكسوراً كسرة وان كان
مضموماً فضمه مخفياً له اذا حكت الله اكبر والناسيل لله اكبر وان شئت
صواباً لله اكبر وشبهه وان كان آخر السورة هاوياً كهاوياً مضموماً
لواو

حذف صلاتها للمشائين نحو ربِّهِ اللهُ اكبر وسُورَةُ اللهِ اكبر واستقلت
الْقَصَصُ الْوَصْلُ الْفَتْحُ اَوَّلُ اَمِ اللهُ عَزَّوَجَلَّ جَمِيعُهُ ذَلِكَا سِتْنَتَا وَعَشْرَتَا هـ
فَاعْلَمْ ذَلِكَ مَوْفَقًا لِحَقِّهِ وَنَهْجًا لِلصَّوَابِ نَارَ اللهِ تَعَالَى
وَبِأَنَّهُ الْمُتَوَفِّقُ وَكَانَ بِالتَّيْسِيرِ بِعِزِّهِ الْعَلِيِّ كَمَا يَصِحُّ أَنَّ
عَلِيَّ بْنَ أَبِي النَّذِيرِ وَعَلَى كَهْ أَوَّلِي الْمَنَّةِ كَبُرُوا لِلدَّيْنِ فِي

عليه السلام

صاحب الذی یسأل الکلیع و هو علی

بسم الله الرحمن الرحيم

بسم الله الرحمن الرحيم

22

15. 35

11. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 84

سید محمد علی

پہلی و سہیلی و تہائی کے جامع ہدف

مکتبہ اسلامیہ دارالعلوم دیوبند

مکتبہ خیر مورخہ

بنی از حسین

۱۰۰

3

10

11

...

100

25

17

مجلس

1964

卷之六

1957/11/15/19/02

卷之四

卷之四

১৯৭১

برای

...

1

...

مجلس العلماء

[illegible]

1967

卷之四

[illegible]

四

[illegible]